॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम्।।

(अथर्व० 5.27.12)

सभी देव इस हव्य को स्वीकार करें।

वर्ष ३३, अंक २१ एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार १२ अप्रैल, २०१० से १८ अप्रैल, २०१० तक

विक्रमी सम्वत् २०६७ दयानन्दाब्द : १८७

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१११ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com पृष्ठ १ से ८ तक

सभा अधिकारियों द्वारा नगालैंड व असम के विद्यालयों व छात्रावासों का निरीक्षण

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कार्य अतिमहत्वपूर्ण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य यहां कार्य करने से पूर्ण होगा – माता प्रेमलता शास्त्री

आदिवासी जनजातियों के लिए पूर्वोत्तर में शिक्षा के और अवसर प्रदान करेगा आर्यसमाज – विनय आर्य

सेवा कार्यों की अपार सम्भावनाएं हैं आदिवासी क्षेत्रों में हम सबको मिलकर इन्हें सम्भालना होगा

आर्यसमाज के रचनात्मक कार्य देखने हैं तो दयानन्द सेवाश्रम संघ की गतिविधियां देखने असम-नगालैंड जाएं

सार्व.सभा के प्रधान कै. देवरत्न आर्य ने माता प्रेमलता शास्त्री को वहां चल रहे कार्यों पर बोकाजान में फोन पर बधाई दी

नए विद्यालय एवं छात्रावास खोलने के लिए 100 बीघा जमीन दान स्वरूप प्राप्त

शीघ्र ही वनवासी-आदिवासी-जनजातीय आर्य महासम्मेलन नगालैंड में आयोजित करने पर विचार

①

②

1. अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थानीय संस्थाओं के सम्मिलित वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंचस्थ दिल्ली से पहुंचे अधिकारीगण एवं अपनी पारंपारिक वेशभूषा में आदिवासी–जनजाति बच्चे।

2. अखिल भारतीय दयानन्द संस्थान की महामन्त्री माता प्रेमलता शास्त्री जी को भूमि दान के कागज सौंपते श्री गंगा लप्थासिया एवं श्री रघुनाथ मेबाग्सा।

3. असम में विद्यालय निर्माण के लिए आर्यसमाज को दान स्वरूप मिली 100 बीघे जमीन का निरीक्षण करते सभा एवं दयानन्द सेवाश्रम के अधिकारीगण ।

③

पूर्वोत्तर राज्यों में किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण करने के लिए माता प्रेमलता जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल असम एवं नगालैंड पहुंचा। प्रतिनिधिमंडल में सर्वश्री विनय आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, सुरेन्द्र गुप्ता, धर्मपाल गुप्ता, आदित्य, आचार्य जीववर्धन, श्रीमती कृष्णा तनेजा, श्रीमती ईश्वर रानी मेहता आदि शामिल थे। प्रतिनिधि मंडल ने वहां दानदाताओं द्वारा उपलब्ध कराई गई भूमि का निरीक्षण किया एवं वहां प्रस्तावित योजनाओं के विषय में विचार–विमर्श किया।

– विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में

न्यायालय ने खारिज किया श्री वैद्य इन्द्रदेव एवं नरेन्द्र सुमन का दावा

फरवरी, 2005 में स्वामी अग्निवेश ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय पर जबरन अवैध कब्जा कर लिया था और उन्होंने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अवैध कार्यकारिणी का गठन कर दिया। इसके पश्चात् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने डॉ. धर्मपाल, डॉ. शिव कुमार शास्त्री, स्वामी अग्निवेश एवं तेजपाल सिंह मलिक आदि के खिलाफ मुकदमा कर दिया। इस मुकदमे में कोर्ट द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री को स्थगन आदेश मिल गया। इसके साथ ही कोर्ट ने उक्त लोगों पर सभा का नाम लेकर कार्य करने की पूरी तरह से रोक लगा दी। इसके पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अवैध रूप से स्थायी बने रहने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को तोड़ा गया फिर उन्होंने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भी तोड़ने के भरसक प्रयास किये। इसके अन्तर्गत अपने आपको सार्वदेशिक सभा का प्रधान कहने वाले श्री मिठाईलाल सिंह ने अवैध रूप से वैद्य इन्द्रदेव और नरेन्द्र सुमन को क्रमशः दिल्ली आर्य

– शेष पृष्ठ 8 पर

कुछ अमृत कण

सत्यार्थ–प्रकाश के प्रथम संस्करण अत्यन्त उपयोगी स्थलों का संग्रह

तृतीय–समुल्लास

ऋषि, आर्य और मलेच्छ कौन होते हैं?

सत्य–असत्य के निश्चय के लिए महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में आठ प्रमाणों की व्याख्या की। उनमें से चौथा प्रमाण शब्द प्रमाण है। यह शब्द प्रमाण क्या है? महर्षि ने न्याय दर्शन का सूत्र दिया कि 'आप्तोपदेशः शब्दः'। आप्त पुरुष का उपदेश ही शब्द प्रमाण है। इस प्रसंग में न्याय दर्शन के सर्वप्रामाणिक भाष्यकर्ता वात्स्यायन मुनि ने ऋषि आर्य और मलेच्छ की चर्चा की। महर्षि ने इनका विवरण सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में इस प्रकार दिया– **ऋषि** का यथार्थ मन्त्रद्रष्टा यथार्थ पदार्थों के विचार वाले। उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व में समुद्र और पश्चिम में समुद्र इन चारों के अवधि पर्यन्त देश में रहने वाले मनुष्यों का नाम **आर्य** है। इस देश से भिन्न देशों में रहने वाले मनुष्यों का नाम **म्लेच्छ** है। म्लेच्छ नाम निन्दित नहीं है, किन्तु 'म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे' इस धातु से म्लेच्छ शब्द सिद्ध होता है। उस का अर्थ यह है कि **जिन पुरुषों के उच्चारण में वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता, उसका नाम म्लेच्छ है।**

यथावत् पुरुषार्थ किये बिना ही शंका नहीं करनी चाहिए।

महर्षि ने तृतीय समुल्लास में पठन–पाठन के विषय में डेढ़ वर्ष में अष्टाध्यायी और डेढ़ वर्ष में महाभाष्य पढ़कर पूर्ण वैयाकरण होने की बात कही है। पर व्याकरण अत्यन्त दुरूह है। स्वयं महर्षि लिखते हैं – "किन्तु जैसा बड़ा परिश्रम व्याकरण में होता है, वैसा श्रम अन्य शास्त्रों में करना नहीं पड़ता।" अतः तीन वर्ष में व्याकरण पढ़ना साधारण लोगों को अत्यन्त असाध्य सा प्रतीत होता है और वे पुरुषार्थ किये बिना ही अविश्वास व शंका करने लगते हैं। ऐसी शंका उत्पन्न न हो इसलिए सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में महर्षि ने लिखा – इसमें कोई सज्जन को शंका मत हो कि बात सत्य नहीं है। किन्तु इस प्रकार से पढ़ना और पढ़ाना होय और पूर्ति न होय तब शंका करनी चाहिये। पहले जो शंका करनी सो व्यर्थ ही है।" – ***क्रमशः***

Cont. form last issue

The Sixteen Rituals of Aaryas

Annaprashan Sanskaar

(The ritual of giving solid grain to an infant for the first time)

The seventh ritual is Annapraashan sanskaar. Annapraashan means intake of grain for the first time in life. Soon after birth, the child receives mother's milk because at that time he neither has teeth to chew not the power to digest. God has arranged for the type of food that is suitable for him at that moment. Although, in general, all parents do gradually bring the child from milk to a solid diet at some point of time, yet only the Vedic culture performs the task of making it a rule and including it as part of the sixteen rituals.

When the child starts growing teeth, it should be assumed that it is time to stop breastfeeding. Teeth usually start appearing in the sixth month and therefore, the time for Annapraashan sanskaar is also six month. Paaraskar Grihyasutra writes : Annapraashan sanskaar should be performed in the sixth month. Some poor mothers affectionately start feeding the child with a solid diet before the sixth month, which spoils his digestion. Similarly, some mothers keep giving the child milk even after teeth have come out, under the impression that as long as the child drinks milk, he stays healthy. This is not actually true. A child who remains only on a diet of milk become flabby and acquires a loose, sagging body structure. Keeping this in mind, the scripture-compilers have fixed a time to terminate milk-feeding so that neither the mother, nor the child is unknowingly harmed.

The method to terminate breastfeeding is that the mother should start substituting her feed with bottled milk on some occasions out of 24 hours. This gradual change goes easy on the child's stomach, else a sudden switch to external milk can lead to abdominal problems. Besides, the mother can also start experiencing breast pain due to full breasts if she stops feeding all of a sudden. Keeping both points in mind, it is best for both mother and the child to slowly taper milk-feeding.

For the first time when the child has to be fed with external milk and solid diet instead of the mother's feeds cow's milk should be used as it is most similar in composition to mother's milk in comparison with milk from other sources. To form this feed, 150 mg of cow's milk should be added before dispensing it to the child. Continue the routine for a week. In the second week, increase the frequency of external milk to twice a day instead of once. Keep the schedule as follows : 6 a.m. –mother's milk, 10 a.m. – cow's milk. 2 p.m. – mother's milk, 6 p.m. –cow's milk, 10 p.m. –mother's milk. By the third week, give external milk thrice and mother's feed twice a day : 6 a.m. –mother's, 10 a.m., 2 p.m., 6 p.m.-cow's , 10 p.m.- mother's milk once again. During the fourth week, keeping the schedule the same as before, switch the 2 p.m. milk for a diet of vegetable soup, a little curd, some honey and some rice. By the fifth week, gradually replace the milk feeds by soup, vegetable, curd, honey etc. In this manner, the child should be brought slowly from the mother's milk towards a solid diet. A sudden termination of mother's milk or external milk and commerncement of solid diet can lead to several abdominal diseases in the child.

- Gyaaneshwaraarya, *Darshanacacharya*

To be continued....

देववाणी : संस्कृत

स्वामिदयानन्दस्य राजनैतिकं चिन्तनम्

गतांक से आगे :–

ततस्तेन सह पर्वतशिखरं वा एकान्तगृहं वा अरण्यं वा यत्र शलाकामात्रमपि न स्यात्तादृशस्थाने उपविश्य चांचल्यं विहाय मन्त्रिभिस्समालोचयेदिति।

यस्य मन्त्रं न जानन्ति समागम्य पृथग्जनाः।

स कृत्स्नां पृथिवीं भुङ्क्ते कोशहीनोऽपि पार्थिवः।।**(म. स्मृ.)**

प्रजाः समागम्यापि यस्य रहस्यं ज्ञ न शक्नुवन्ति, यस्य मन्त्रणा शुद्धा, गम्भीरा, परोपकारार्था, सर्वदा गुप्ता च भवति साधनहीनः सन्नपि सकलां पृथिवीं पालयितुं समर्थो भवति।

एवं स राजा अमात्यादिभिर्युक्तः सन् मन्त्रं गोपायमानो सदा सामात्यो दुष्टाचारेभ्यो दूरे स्थित्वा नित्यं धर्मे न्याये च वर्त्तमानो सर्वाभ्यः प्रजाभ्यो दृष्टान्तत्वेन व्यवहरेदिति (उत्थायेतिश्लोक– प्रभृत्यत्र पर्यन्तं सत्यार्थप्रकाशे षष्ठसमुल्लासात्)।

तथा च सत्यार्थप्रकाशान्ते स वदति –'संक्षेपतोऽत्र राजधर्मो वर्णितः। विशेषतो वेदे, मनुस्मृतौ सप्तमाष्टम नवमाध्यायेषु, शुक्रनीतौ, विदुर प्रजागरे, महाभारत शान्तिपर्वस्थ–राजधर्मा पद्धर्मादिषु वर्णितां संपूर्णां नीतिमनुतिष्ठन् माण्डलिको वा सार्वभौम–चक्रवर्ती वा भवेदिति। **'वयं प्रजापतेः प्रजा अभूम (य. 18–29)'** इदं यजुर्वेद वचनं। वयं प्रजापति–परमेश्वरस्य प्रजाः। परमात्मास्माकं राजा। वयं तस्य किंकरवदिति ज्ञातव्यमस्माभिरिति। स परमात्मा स्वकृपया स्वसृष्टावस्मान् राज्याधिकारिणो विद्ध्यात्। अस्मद्धस्तेभ्यः स्व–सत्य–न्याय व्यवस्थां प्रवर्त्तयेदिति।' न चात्र किंचित्तिरो– हितमिवास्ति।

एवं स्वामिदयानन्दस्य आदर्शराजनीतिचिन्तनं संक्षेपेण प्रदर्शितम्। तत् चास्माभिः सम्यग्ज्ञात्वानुष्ठेयं विश्वस्मिंश्च शान्तिः संस्थापनीयेति।

– आचार्यो रवीन्द्रः, आर्ष विश्वविद्यालयम् वडलूरु, कामारेड्डी (आं.प्र.)

(राष्ट्रिय संस्कृत संगोष्ठी, 5–6 सितम्बर, 09 को पाठित निबन्ध)

बोध कथा

जीवन सितार बजाओ

– महात्मा आनन्द स्वामी

लाहौर में एक बार आर्यसमाज का उत्सव हो रहा था। एक सज्जन आये, बोले– ''मैं बहुत अच्छी तरह सितार बजाकर गाता हूं। मुझे एक गीत सुनाने का अवसर दिया जाय।''

प्रोग्राम में से कोई समय निकलता ही नहीं था परन्तु कई दूसरे व्यक्तियों ने भी समय देने के लिए कहा तो मन्त्री जी ने कहा–''अच्छा पंद्रह मिनट आपको दिए जाते हैं। पन्द्रह मिनट में अपना गाना समाप्त कीजिए।'' गानेवाले सज्जन अपने सितार को लेकर स्टेज पर जा पहुंचे और अपने सितार की तारों को हिला–हिलाकर कीलियाँ मरोड़ने लगे। थोड़ी देर टंग–टंग की ध्वनि होती और फिर कोई कीली मरोड़ी जाती। इस प्रकार पांच मिनट व्यतीत हो गये।

मंत्री जी ने कहा –'' श्रीमन्! आप गायेंगे भी या इसी प्रकार कीलियाँ मरोड़ते रहेंगे?''

वे बोले–''श्रीमन्! अभी गाता हूं। सितार के तार ठीक कर लूं।'' और फिर कीलियाँ मरोड़ने लगे। दस मिनट व्यतीत हो गये। बारह–चौदह मिनट बीत गये, उनका कीलियाँ मरोड़ना समाप्त नहीं हुआ।

मंत्री जी ने कहा–''एक मिनट शेष है, अब भी कुछ गाना हो तो गा लो।'' वह अंतिम मिनट में भी कीलियाँ ही मरोड़ता रहा।

मंत्री ने खेद के साथ कहा–''आइए श्रीमन्! मंच से नीचे उतर आइए। आपका समय समाप्त हो गया है।''

अरे ओ जीवन के सितार बजानेवालो! सोचो! सोचो कि कब तक तुम सितार की कीलियाँ ही मरोड़ते रहोगे, शरीर को बनाते और संवारते रहोगे। अरे! यह सितार बजाने के लिए मिली है, केवल मरोड़ने के लिए नहीं। शरीर की रक्षा करो अवश्य। इसे खिलाओ, पिलाओ। इसे स्वस्थ बनाये रखो, परन्तु आत्मा को भी तो कुछ खिलाओ, जो वास्तविक गाने वाला है। इसके बिना यह सितार व्यर्थ है। इसके बिना आंख देखती नहीं। जिह्वा चलती नहीं, नाक सूंघती नहीं– कुछ भी नहीं होता।

कामिक्स प्रतियोगिता के विजेताओं के सूचनार्थ

महर्षि दयानन्द सरस्वती कामिक्स प्रतियोगिता के विजेताओं की पुरस्कार राशि का चैक भेजने की प्रक्रिया शुरू हो गयी है। यदि किसी विजयी प्रतियोगी को 30 अप्रैल 2010 तक चैक नहीं मिलता है तो वे **संयोजक, महर्षि दयानन्द सरस्वती कामिक्स प्रतियोगिता, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1** के पते पर यथाशीघ्र पत्र भेजें। ***– संयोजक***

बलिदान दिवस 6 अप्रैल पर विशेष

लेखकीय स्वतन्त्रता के लिए बलिदान देने वाले
अमर शहीद महाशय राजपाल

– *डॉ. भवानी लाल भारतीय, 8/423 नन्दन वन, जोधपुर (राजस्थान)*

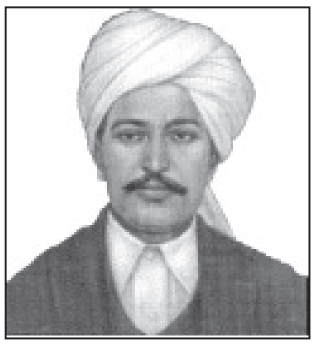

विचार स्वातन्त्र्य स्वस्थ मानव जीवन की प्रमुख शर्त है। विचारशील प्राणी होने के कारण मनुष्य से यह हमारी स्वाभाविक आशा रहती है कि वह प्रत्येक की वैचारिक स्वतन्त्रता की कद्र करेगा और दूसरों को भी विचाराभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता देगा। पंजाब में अपना प्रकाशन व्यवसाय, मुख्यतः हिन्दी के ग्रन्थों का प्रकाशन आरम्भ कर मध्यवित्त वर्ग के महाशय राजपाल ने उस उर्दू–अंग्रेजी प्रधान प्रदेशों में एक नई क्रान्ति का सूत्रपात किया था। आषाढ़ वि. सं. 1942 (1885ई.) में अमृतसर के मामूली अर्जीनवीस का काम करने वाले लाला रामदास के यहां महाशय राजपाल का जन्म हुआ। प्रारम्भ में राजपाल ने एक आर्यसमाज हकीम फतहचंद के यहां साधारण कामकाज (मुख्यतः) लिखने–पढ़ने का किया। तत्पश्चात् आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर वे आर्यसमाज की पत्रकारिता से जुड़े। महात्मा मुन्शीराम के पत्र **सद्धर्म प्रचारक** में कुछ काल तक काम करने के पश्चात् वे प्रसिद्ध आर्यनेता महाशय कृष्ण द्वारा सम्पादित साप्ताहिक उर्दू–पत्र **प्रकाश** के सहकारी सम्पादक के रूप में कार्य करने लगे। महाशय कृष्ण ने उन्हें छोटे भाई का सा प्यार ही नहीं दिया, पुस्तक प्रकाशन तथा पत्र सम्पादन के कुछ ऐसे गुर भी सिखाये, जो आगे चलकर महाशय राजपाल के लिए प्रकाशस्तम्भ के तुल्य बन गये।

प्रकाश कार्यालय में सहायक के रूप में कार्य करते समय म. राजपाल ने रिपोर्टिंग के कार्य में महारत हासिल कर ली। 1908 के वर्ष में जब महाशय मुन्शीराम ने आर्यसमाज बच्छोवाली लाहौर के वार्षिकोत्सव पर **आर्यसमाज और राजनीति** पर अपना प्रसिद्ध व्याख्यान दिया, तो उसे प्रकाश के संवाददाता के रूप में राजपाल ने जिस निपुणता से प्रकाशित किया, वह इस क्षेत्र में उनकी व्युत्पन्नता सूचित करता था। यह वह समय था जब पटियाला राज्य में आर्यसमाजियों पर राजद्रोह करने तथा षड्यंत्रकारी होने का आरोप लगाकर मुकद्दमा चलाया गया था और इस राजकोप से बचने के लिए नीति तथा विलक्षण बुद्धि की आवश्यकता थी।

शीघ्र ही महाशय राजपाल ने स्वयं का प्रकाशन कार्य आर्य पुस्तकालय और सरस्वती आश्रम के नाम से आरम्भ कर दिया। उन्होंने स्वसम्पादित **भक्ति दर्पण** शीर्षक गुटका आकार का एक ऐसा दिव्य ग्रन्थ प्रकाशित किया, जिसमें ज्ञान, कर्म उपासना का समन्वित निरूपण किया था। इस ग्रन्थ की लोकप्रियता आज भी यथावत् है और अब तक इसके 65 संस्करण निकल चुके हैं। आर्यसमाज का ऐसा कौन सा लेखक था, जिसके ग्रन्थों का प्रकाशन म. राजपाल ने न किया हो। उन दिनों स्वामी सत्यानन्द की कथाओं और उनके आध्यात्मिक प्रवचनों की सर्वत्र धूम थी। म. राजपाल ने **सत्योपदेश माला** शीर्षक से इन स्वामी सत्यानन्द के प्रवचन हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में सम्पादित कर प्रकाशित किये। इसी प्रकार स्वामी सर्वदानन्द का प्रवचन संग्रह **आनन्द संग्रह** महात्मा हंसराज के व्याख्यानों का संग्रह **मोतियों का हार** तथा दार्शनिक विद्वान् प्रो0. दीवानचंद के लेखों का संग्रह **फूलों का गुच्छा** भी महाशयजी की सम्पादन कला के ही परिचायक हैं। यह और भी आश्चर्यजनक था कि राजपाल जी ने हिन्दी और उर्दू के साथ–साथ अंग्रेजी तथा पंजाबी में भी साहित्य प्रकाशित किया। पं. चमूपति द्वारा लिखित आर्यसमाज के नियमों की अंग्रेजी व्याख्या The Ten commandments of Dayanand का प्रकाशन उसी काल में हुआ था।

विचार स्वतंत्रता की रक्षा के लिए बलिदान

जब एक आपत्तिजनक पुस्तक **उन्नीसवीं सदी का महर्षि** के प्रतिकार में पं. चमूपति ने इस्लाम के पैगम्बर के दाम्पत्य जीवन पर तथ्यात्मक प्रकाश डालने वाली पुस्तक लिखी तो सम्प्रदाय विशेष में भूकम्प आ गया। यह पुस्तक तो बहुविवाह की हानियों को प्रकाशित करने वाली एक शिक्षाप्रद पुस्तक थी। तथापि इसके अज्ञात नामा लेखक (पुस्तक पर लेखक का नाम नहीं दिया गया था) और प्रकाशक महाशय राजपाल के खिलाफ एक बवंडर सा मच गया। आग में घी डालने का काम किया महात्मा गांधी के उन लेखों ने जो उनके पत्र **यंग इण्डिया** में क्रमशः छपते रहे। इन लेखों ने साम्प्रदायिक हिंसा को बल दिया। यद्यपि कोर्ट ने महाशय जी को बरी कर दिया था और उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तक को निर्दोष पाया गया, किन्तु स्वयं को साम्प्रदायिक सौमनस्य का पुजारी मानने वाले गांधीजी के विषाक्त लेखों ने जिस नफरत तथा बदले की आग के वातावरण का निर्माण किया वह सहज में बुझने वाली नहीं थी। राजपाल जी की दूकान पर हमलों का सिलसिला जारी हुआ। 1927 में जब खुदाबारा नामक एक आततायी ने उन पर हमला किया तो वे दैवी विधान से बच गये। दूसरी बार इसी दूकान पर बैठे स्वामी सत्यानन्द को राजपाल समझ कर उन पर अब्दुल अजीज ने हमला किया। किन्तु अन्तिम बार 6 अप्रैल 1929 को

– **शेष पृष्ठ 6 पर**

जन्मदिवस 19 अप्रैल पर विशेष

आर्यसमाज की शिक्षा नीति के शिल्पी
महात्मा हंसराज

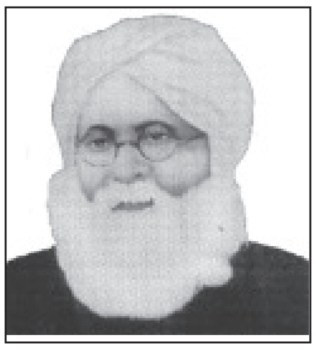

लाहौर के आर्यों ने जब एक सार्वजनिक सभा में निश्चय किया कि महर्षि दयाननद की स्मृति को स्थायी बनाने हेतु एक ऐसा महाविद्यालय स्थापित किया जायेगा, जिसमें प्राचीन संस्कृत शास्त्रों के साथ–साथ पाश्चात्य ज्ञान, विज्ञान तथा अंग्रेजी को भी पाठ्यक्रम में समुचित स्थान मिलेगा, तो इस **दयानन्द ऐंग्लोवैदिक कॉलेज** के प्रथम प्रिंसिपल पद का भार लाला महात्मा हंसराज (1864–1938) को सौंपा गया। हंसराज का जन्म होशियारपुर के निकट ग्राम बजबाड़ा में एक सामान्य परिवार में हुआ था। 1885 में उन्होंने बी.ए. किया और डी.ए.वी. कॉलेज को बिना कोई वेतन लिए अपनी सेवाएं सौंप दीं। 1 जून 1886 को यह शिक्षण संस्था एक हाईस्कूल के रूप में स्थापित की गयी जिसे शीघ्र ही एक कॉलेज के रूप में क्रमोन्नत कर दिया गया। निरन्तर एक चौथाई शती (1911 तक) महात्मा जी का मागदर्शन इस कॉलेज को प्राप्त होता रहा। म. हंसराज के द्वारा संचालित पंजाब के इस प्रथम स्वयंशासी कॉलेज में शिक्षा की जो नीति स्वीकार की गई वह शिक्षा विषयक पौरस्त्य एवं पाश्चात्य दोनों मूल्यों की समन्वित नीति थी। यही कारण था कि डी.ए.वी कॉलेज में वैदिक संस्कृति, दर्शन, साहित्य और हिन्दी भाषा के अतिरिक्त विज्ञान की विभिन्न शाखाओं (रसायन, भौतिक, गणित, प्राणी विज्ञान, वनस्पति विज्ञान) यहां तक कि अभियांत्रिकी, आयुर्वेद तथा कला कौशल आदि जीविकोपार्जन में सहायक विद्याओं का भी स्तरीय अध्ययन कराया जाता था।

डी.ए.वी. कालेज को भारत के एक महान् शिक्षण संस्थान के रूप में विकसित करने में महात्मा हंसराज ने स्वयं को सर्वात्मना समर्पित कर दिया था। स्वयं गृहस्थ होते हुए कॉलेज प्रबंधकारिणी से एक पैसा भी वेतन के रूप में न लेना उनके महान् त्याग तथा समर्पण मात्र का परिचायक है। प्राचार्य के रूप में सेवानिवृत्त होने के पश्चात् भी वे अनेक वर्षों तक कॉलेज की प्रबंधक समिति के अध्यक्ष रहे तथा उस यशस्वी संस्था को अपना मार्गदर्शन देते रहे।

न केवल डी.ए.वी. कालेज को, आर्यसमाज के देशव्यापी संगठन को भी महात्माजी का सुयोग्य नेतृत्व निरन्तर प्राप्त होता रहा। वे केवल शिक्षाशास्त्री ही नहीं थे, वेदों के मार्मिक अध्येता तथा चिन्तक भी थे। उनका यह रूप उनके द्वारा लिखित वेद विषयक ग्रन्थों (**The interpretation of the**

– **शेष पृष्ठ 6 पर**

ब्रह्म–सूत्र
द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (21)

नाणुरतच्छ्रुतेरिति चेन्नेतराधिकारात् ।।21।।

अर्थ– (न) नहीं है (अणुः) आत्मा अणु परिमाण (अतत् श्रुतेः) श्रुति में ऐसा नहीं बताया गया है (इति चेत्) यदि ऐसा कहो तो (न) तुम्हारा कथन ठीक नहीं है (इतराधिकारात्) अन्य के अधिकार से।

भावार्थ– आत्मा अणु नहीं है क्योंकि श्रुति में उसे ऐसा नहीं बताया है अपितु उसे विभु (सर्वव्यापक) बताया गया है, यदि ऐसा कहो तो तुम्हारी बात सही नहीं है। वस्तुतः वहाँ जीवात्मा का नहीं अपितु अन्य आत्मा अर्थात् परमात्मा का संदर्भ है। इस संदर्भ में बृहदारण्यक उपनिषद् (4/4/22) में कहा है–**"स वा एष महानज आत्मा योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु।"** अर्थात् यह जो प्राणों में विद्यमान विज्ञानमय आत्मा है निश्चय ही यह महान् है और अजन्मा है।

यहाँ प्रश्न उठता है कि उक्त श्रुति में आत्मा को महान् कहा है, तब उसे अणु कैसे माना जाए। सूत्रकार इसका उत्तर देते हुए कहते हैं कि ऐसा विचार उचित नहीं है क्योंकि बृहदारण्यक उपनिषद् के ऊपर दिए उद्धरण में आत्मा को महान् बताकर उसकी व्यापकता सिद्ध की गई है। वहाँ वस्तुतः जीवात्मा का संदर्भ नहीं है, अपितु वहाँ परमात्मा की महानता वर्णन है। उसे ही महान् और विभु कहा है। ऐसा ही कथन मुंडक उपनिषद् (3/1/9) में उपलब्ध होता है। वहाँ कहा है– **"यस्मिन् विशुद्धे भवत्येष आत्मा।"** अर्थात् जिसके विशुद्ध हो जाने पर यह आत्मा विभु जाना जाता है। यद्यपि बृहदारण्यक उपनिषद् के 'प्राणेषु' पद से यह संदेह हो सकता है कि यह जीवात्मा के बारे में है। परन्तु यहाँ प्रसंग से ब्रह्म (परमात्मा) का वर्णन होने से इसे जीवात्मा के संबंध में नहीं माना जा सकता। अभिप्राय यह है कि उक्त श्रुति में आत्मा शब्द 'ब्रह्म' के लिए है जीवात्मा के लिए नहीं। इस प्रसंग में ब्रह्म को ही महान् और 'अज' कहा है जीवात्मा को नहीं। अतः ऐसी शंका ठीक है कि जीवात्मा महान् और विभु है। शास्त्रों के अनुसार जीवात्मा को अणु और परिच्छिन्न ही मानना होगा। इसी संदर्भ में अपने कथन को पुष्टि में सूत्रकार अगले सूत्र में एक और युक्ति देते हैं।

– डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

प्रथम पृष्ठ का शेष

विश्व में आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं, आदर्शों, नियमों को फैलाने में प्रयासरत

दिल्ली सभा की भावी योजना – (7)

राष्ट्रीय आर्य सन्दर्भ अभिलेखागार

आर्यसमाज एक ऐसी अनूठी संस्था है, जिसके कार्य और प्रभाव का मूल्यांकन करना असम्भव तो नहीं मगर इतना व्यापक तो है ही कि इसके विभिन्न पक्षों की पड़ताल करने के लिए कई–कई विद्वानों की समितियाँ बनाकर भी किया जाए तो वे विद्वान् अपना जीवन लगाकर भी अन्तिम बेला में सन्तोष की सांस नहीं ले पाएँगे। आर्यसमाज ने हर स्तर के मनुष्य के जीवन के हर पक्ष को अपने सुधारवादी दृष्टिकोण से छूकर सुख, शान्ति, न्याय, सम्मान व सदाचार का ऐसा पाठ पढ़ाया कि इसके सम्पर्क में आने वाले पतित जन पवित्र होकर परिपुष्ट हो गए। अगणित पथ से भ्रष्ट हुए पीड़ित जनों ने अपने जीवन का कायाकल्प करके स्वर्ग के सोपान तक पहुँचा दिया। समाज का छोटे से छोटा दीन, गरीब समाज की मुख्यधारा से काट कर फेंक दिया गया। अभाव व अपमान का जीवन जीने वाला व्यक्ति व वर्ग आर्यसमाज की रंगत और संगत पाकर जीवन का मूल्य समझने लगा। बुद्धिजीवी वर्ग तथा धर्माचार्य कहे जाने वाला वर्ग विशेष भी आर्यसमाज के कार्य और प्रभाव से अपनी परम्परागत मान्यताएँ बदलकर उन्हें मानवीय संवेदनाओं व विज्ञान की तर्कनाओं के आलोक में परिभाषित करने लगा। धर्म कहे जाने वाले देशी–विदेशी मतपन्थों के कथित ईश्वरीय ज्ञान आर्यसमाज के तेज के सामने तप कर पिघलने लगे। आर्यसमाज के वेद आधारित मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत तथा विद्या व विज्ञान की चट्टान पर खड़े हुए आर्यसमाज के सिद्धांतों ने त्यागी, तपस्वी व धर्मप्राण पुरुषों का आश्रय पाकर मानव को एक ऐसी आत्मशक्ति से सराबोर कर दिया कि उसके अवशेष भी युगों तक का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

महर्षि दयानन्द का अनुपम आदेश "संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" आर्यसमाज ने एक लम्बे समय तक बड़ी निष्ठा से निभाया ऋषिवर स्वयं कहते हैं–''जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ वैसा ही विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी (वैसा ही) वर्तना योग्य है।" इन दोनों उद्धरणों के पीछे यही भावना है कि आर्यसमाज के कार्य व प्रभाव को किसी परिधि में बाँधकर देखना संकीर्णता प्रकट करना ही होगा। व्यक्ति से लेकर विश्व स्तर तक के व्यापक फलकों को समेटकर लोक कल्याण का पावन अभियान चलाने वाले आर्यसमाज के कार्यों का मूल्यांकन करना, सच में कितना श्रमसाध्य होगा, यह कल्पना करना महर्षि के इन कथनों से प्रकट हो जाना चाहिए। प्रिंसटन विश्वविद्यालय न्यूजर्सी यू.एस.ए. के इतिहासवेत्ता चार्ल्स एच. हैमसेथ आर्यसमाज के कार्यों की व्यापकता को नए आयाम देते हुए लिखते हैं–''उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक ईसाइयों को छोड़कर आर्यसमाज ने भारत की सभी धार्मिक संस्थाओं के सार्वजनिक कार्यों को पूरा करने में उनका नेतृत्व किया।" आर्यसमाज के कार्यों की व्यापकता को प्रकट करने वाले उद्धरण इकट्ठे किए जाएँ तो उनका ही एक विशाल ग्रन्थ तैयार हो सकता है। इन उद्धरणों से पता चलता है कि आर्यसमाज के कार्यों तथा आर्यसमाज के प्रभाव का लेखा–जोखा रखने के लिए प्रयास करने वालों को कहाँ–कहाँ तक गहन छान–बीन करनी पड़ेगी।

हमारे उन लोकसेवक महामानवों ने जितना तप और त्याग किया तथा बलिदान दिए उन सबका मूल्य हमारी यह वर्तमान पीढ़ी नहीं समझती। उनके पावन श्रमबिन्दु और उज्ज्वल रक्त से सुवासित रजकणों को समेटकर अगामी पीढ़ी के लिए प्रेरणा पुंज के रूप में सुरक्षित करना क्या हमारा कर्तव्य नहीं बनता? क्या हमें इतना भी नहीं करना चाहिए, क्या हम यह सब करने का संकल्प लेकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ मिलकर ऋषि ऋण को चुकाने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहेंगे। तो आओ, सभा की इस महत्वांकाक्षी योजना के सहभागी बनो। सभा ने निर्णय लिया है कि आर्यसमाज से सम्बन्धित सभी प्रामाणिक अभिलेख आर्यसमाज की अमूल्य धरोहर के रूप में सुरक्षित होने चाहिए। आर्यसमाज ने कब कहाँ और क्या काम किया, उसका क्या

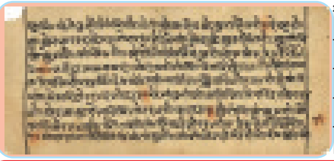

प्रभाव रहा तथा तत्कालीन ग्रन्थों, पत्रों या अभिभाषणों में उसका मूल्यांकन किस प्रकार किया गया?

यह सब हमारे पास होना चाहिए। किसी सामाजिक कार्यकर्त्ता, राजनेता, विद्वान् तथा किसी मत–पन्थ के प्रतिष्ठित विद्वान् ने आर्यसमाज के सन्दर्भ में कुछ कहा या लिखा हो तो उनकी अनुकूल या प्रतिकूल टिप्पणी का ऐतिहासिक महत्त्व हमारे लिए चिन्तन के नए द्वार खोलता है। एक समय था जब आर्यसमाज का पौराणिकों, जैनियों, ईसाई व मुसलमानों के साथ सैद्धान्तिक संवाद (शास्त्रार्थ) चलता ही रहता था। आर्यसमाज का छोटा–मोटा कार्यकर्त्ता जो कहता या करता तो वह लोगों में चर्चा का विषय बन जाता। दैनिक समाचार पत्र व मासिक, पाक्षिक पत्र–पत्रिकाएँ आर्यसमाज के समर्थन या विरोध में बड़े चटकारे लेकर छापते रहते थे। आर्यसमाज के विद्वान् भी तत्कालीन टिप्पणियों व समर्थन या विरोध में लिखे गए ग्रन्थों का सटीक विश्लेषण करते थे। ऐसे समस्त दस्तावेज हमारे लिए अत्यन्त मूल्यवान हैं।

एक दूसरा पक्ष यह भी है कि आर्यसमाज के विभिन्न समारोहों में देश–विदेश के विद्वानों व राजनेताओं को सादर आमन्त्रित किया जाता रहा है और आज भी ऐसा हो रहा है। उनके ऐतिहासिक चित्र व अभिभाषण जो कुछ उन्होंने वहाँ कहा, वह सब हमारे मूल्यवान इतिहास का एक अभिन्न अंग हैं। उनकी सुरक्षा हमारा दायित्व ही नहीं, धर्म है। हमारे तत्कालीन विद्वान् बड़े दूरदर्शी थे, वे ऐसी छोटी–मोटी दिखने वाली हर घटना का महत्त्व जानते थे। इसलिए उन्होंने हर सम्भव तथ्य को सुरक्षित करने का हर सम्भव उपाय किया। ऐसे ढेरों मूल्यवान अभिलेख आज हमारे आर्यसमाजों के पुस्तकालयों में यूँ ही दबे पड़े हैं। कुछ को हमारे आलस्य प्रमाद के कारण चूहे या दीमक खा गए हैं और कुछ आज भी हमारी प्रतीक्षा में हैं कि कोई आकर हमारी देखभाल करे। आर्यसमाज के सिद्धान्तों, कार्यों व राष्ट्रीय महत्त्व के रखने वाली विभिन्न गतिविधियों को लेकर अनेक देशी–विदेशी विद्वानों, आलोचकों व शोधार्थियों ने बहुत कुछ लिखा है तथा आज भी देश–विदेश के विभिन्न मत–पन्थों से प्रभावित विद्वान् व शोधार्थी इस दिशा में काम कर रहे हैं। कितना अच्छा हो कि आर्यसमाज से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों के वैचारिक दस्तावेज तथा आर्यसमाज के कार्यों का प्रभाव दर्शाने वाले विभिन्न ग्रन्थ उन विद्वान् व शोधार्थियों को एक ही स्थान पर प्राप्त हो जाएँ? आज के युग में जबकि विश्व की सम्पूर्ण जानकारी एक कमरे में बैठकर या कार में यात्रा करते हुए उंगलियां चलाकर प्राप्त की जा सकती है, ऐसे में आर्यसमाज के विषय में जानने के लिए देश के विभिन्न नगरों की वर्षों से बन्द पड़ी अलमारियों की धूल झाड़कर कौन माथा पच्ची करना चाहेगा।

आर्यो! तनिक विचार करो। हमारे जीवनदानी महापुरुषों के तप, त्याग और आत्मबलिदान की गौरव गाथाओं को हम अपने जीवन की आहुति देकर आगे नहीं बढ़ा सकते तो कम से कम उनकी सुरक्षा के लिए थोड़ा–सा समय निकालकर उनके प्रति अपने अनुराग को बनाए रख ही सकते हैं। हमारा यह थोड़ा–सा श्रम उनके जीवन मूल्यों को पीढ़ियों तक जीवित बनाए रखेगा। हम इधर–उधर दृष्टि डालते हैं तो देखते हैं कि सभी संस्थाएँ अपने छोटे–छोटे कार्यों को प्रचारित–प्रसारित करके संसार के सामने प्रस्तुत करते हैं, दूसरी ओर हम हैं कि अपने महापुरुषों के अनूठे तप, त्याग को भी धूल की परतों में लपेट कर दीमकों का भोजन बना डालते हैं। हमारा यह प्रभाव हमारी भावी पीढ़ियों को हमारे वैदिक आदर्शों से वञ्चित करने वाला एक आत्मघाती अपराध माना जाएगा। हम एक अनमोल विरासत को सँभालने, वैदिक आदर्शों के लिए जीवन की आहुति देने वाले महामानवों के जीवन मूल्यों को बनाए रखने के लिए हम समको मिलकर यह **'राष्ट्रीय आर्य सन्दर्भ अभिलेखागार'** भव्य रूप में स्थापित करना होगा। दिल्ली देश की राजधानी है, यहाँ स्थापित सन्दर्भ अभिलेखागार आर्यसमाज के गौरवमयी इतिहास का केन्द्र बनकर उभरेगा। सभा इसके लिए ठोस कदम उठा चुकी है। यह स्वप्न निकट भविष्य में ही मूर्त रूप लेने वाला है। आर्यसमाज में आज जहाँ पदलोलुपता दिखावा एवं सिद्धान्तहीनता की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं तो वहीं हमारे पास आज भी निष्ठावान, सिद्धान्तजीवी, कर्मठ आर्यों की भी कमी नहीं है। हम जानते हैं कि सच्चे कर्मशील व वैदिक आदर्शों के लिए जीनेवाले सत्यनिष्ठ आर्यों का मनोबल बिखरा हुआ है। ऐसे सच्चे आर्य रत्नों को सभा अपना हर प्रकार का समर्थन सहयोग व उत्साहवर्धन करने के लिए अपने संकल्प पर आज भी दृढ़ है। समस्त सिद्धान्तनिष्ठ आर्यजनों से हमारा यह आत्मीय अनुरोध है कि आप सबका सहयोग व वैचारिक सम्बल मिलता रहा तो सभा आधुनिक संचार माध्यमों से लेकर हर प्रकार के मानवीय संसाधनों का सदुपयोग करके आर्यसमाज को उसका प्राचीन गौरव, प्रखर आत्मविश्वास और सामाजिक प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कराने के अपने व्रत को निभाने में अवश्य सफल होगी। सुभाष चन्द्र बोस ने खून माँगकर आजादी का वचन दिया था। सभा आपसे श्रम व समर्थन माँगकर ऋषि के स्वप्न को साकार करने का आश्वासन देती है। आर्यो! आओ। आलस्य–प्रमाद को त्यागो, अपने तपःपूत बलिदानियों के कीर्ति कणों की सुरक्षा का संकल्प लेकर आर्य सन्दर्भ अभिलेखागार के स्वप्न को साकार करने में जुट जाओ।

आर्यसमाजी विद्वानों ने खण्डन–मण्डन के लिए जिन विभिन्न मतावलम्बियों के विभिन्न ग्रन्थों की समीक्षा की है। धीरे–धीर वे लोग अपने ग्रन्थों ने वैदिक सिद्धान्तों के अनुरूप परिवर्तन करते जा रहे हैं। एक समय.... जब वे हमारी उन समीक्षाओं को निराधार कहकर हमारे विद्वानों की छवि खराब करेंगे। हमें ऐसे ग्रन्थों को भी सुरक्षित रखना होगा ताकि समय आने पर उन्हें आईना दिखा सकें।

विशेष– यह योजना उपयोगिता व महत्व की दृष्टि से महत्वाकांक्षी है। इसकी ऐतिहासिक भूमिका यह होगी कि भविष्य में कभी कोई आर्य विद्वान् आर्यसमाज का इतिहास लिखना चाहे अथवा कोई शोध करना हो तो यह आर्य अभिलेखागार उन्हें एक स्थान पर आवश्यक एवं प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध कराएगा। इसलिए इस योजना के शेष पक्षों पर अगले अंक में विस्तार से लिखा जाएगा। आप पढ़ेंगे कि इसकी आवश्यकता, इसकी कार्य पद्धति एवं आपको अपनी ऐतिहासिक सामग्री को आर्यसमाज के इतिहास का हिस्सा बनाने के लिए क्या करना है। यह सब अगले अंकों में पढ़ेंगे।

– रामनिवास 'गुणग्राहक'
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

एक निवेदन :– ***इन योजनाओं की रूपरेखा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा बहुत पहले से बना रही थी। इन्हें अब मूर्तरूप देने का पर्यत्न किया जा रहा है। आप सबके दिए सहयोग से इसे जल्दी ही पूरा करना सम्भव होगा। श्री रामनिवास जी गुणग्राहक इन योजनाओं को लेखबद्ध रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इस कार्य में आचार्य श्री हरिप्रसाद जी भी सहयोग कर रहे हैं। सम्माननीय पाठकों से निवेदन है कि सभा द्वारा तैयार की जा रही इन योजनाओं में यदि वे किसी प्रकार भी सहयोगी बनना चाहें अथवा सुझाव देना चाहें तो वे आचार्य श्री रामनिवास जी अथवा आचार्य श्री हरि प्रसाद जी से सभा कार्यालय –15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 दूरभाष – 23360150, 23365959 पर सम्पर्क करें। आपके सुझावों, विचारों का हम हृदय से स्वागत करेंगे।***

– विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

– जारी पृष्ठ 5 पर

मेहनत एवं ईमानदारी से काम करने पर मिलती है सफलता – महाशय धर्मपाल
ग्रामीण क्षेत्र में क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन की आवश्यकता– विनय आर्य

आर्यसमाज नरेला का 79 वां वार्षिकोत्सव संपन्न

"कठोर परिश्रम और ईमानदारी से कार्य करने पर सफलता मिलती है।" ये विचार आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने आर्यसमाज नरेला के 79वें का वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 4 अप्रैल 2010 व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में आज भी आर्यसमाज के प्रचार की बहुत आवश्यकता है। हमारे कमजोर होने से शहरों की कुरीतियां अब ग्रामों में भी आ गई हैं और पुराने पाखण्ड फिर सिर उठा रहे हैं। गांव के नौजवानों में निरन्तर बढ़ रही नशे की प्रवृत्तियों को रोकने के लिए विशेष अभियान चलाने की आवश्यकता है। उन्होंने नशे के विरोध में कार्य करने के लिए नरेला आर्यसमाज के अधिकारियों को बधाई भी दी।

इससे पूर्व दिनांक 3 अप्रैल को स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि स्वामी ओमानन्द जी ने अपना जीवन आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में लगा दिया। महर्षि दधीचि का उदाहरण देते हुए उन्होंने आर्यों से आर्यसमाज के प्रचार के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने का आह्वान किया। स्वामी सत्यबंधु जी ने आर्यसमाज में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने पर बल दिया। बहन सरोज जी आर्या एवं सोमप्रकाश जी के भजन हुए। इस अवसर पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में कन्या गुरुकुल नरेला और अन्य विद्यालयों के बच्चों ने भाग लिया।

इससे पूर्व प्रातःकाल श्री धर्मव्रत जी शास्त्री (पूर्व प्रिंसिपल) ने यज्ञ कराया। 4 अप्रैल को प्रातः काल यज्ञोपरान्त विद्यालयों के छात्रों की भजन गायन प्रतियोगिता हुई।

नारी सशक्तीकरण (महिला सम्मेलन) में श्रीमती राममूर्ति खत्री एवं ब्र0सुमेधा आर्या ने नारियों को वेदानुकूल शिक्षा देने पर जोर दिया। विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित महाशय धर्मपाल जी (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा), श्री धर्मपाल जी आर्य (आर्य नेता), श्री विनय आर्य (महामन्त्री, दिल्ली सभा) का समाज के संरक्षक श्री संतोष कुमार खत्री ने शाल ओढ़ाकर सम्मान किया।

श्री विनय आर्य ने कहा कि महाशय धर्मपाल जी वेद प्रचार रथ की व्यवस्था कर रहे हैं जो सभी आर्यसमाजों की मांग के अनुसार उपलब्ध करवाया जायेगा और उसका भरपूर लाभ उठाना चाहिए।

नशामुक्ति सम्मेलन में समाज के मंत्री श्री राजपाल जी ने कहा कि कुछ दिनों पूर्व नरेला क्षेत्र में डी.एस.आई.डी.सी. ने अंग्रेजी शराब की दुकानें खोली थीं। आर्यसमाज नरेला के अथक प्रयास से उन दुकानों को बंद कराया गया। इसमें डॉ. योगानन्द जी शास्त्री (अध्यक्ष, दिल्ली विधान सभा), श्री जसवंत सिंह राणा (विधायक नरेला क्षेत्र) ने बहुत सहयोग किया।

प्रिंसिपल श्री मेहर लाल पंवार एवं आचार्य सतीश जी आदि ने भी सैकड़ों आर्यों के समक्ष विचार प्रकट किये।

– राजपाल आर्य, मंत्री

आर्यसमाज नरेला के वार्षिकोत्सव समारोह को सम्बोधित करते महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं सर्वश्री राजपाल आर्य, हेमराज बंसल, धर्मपाल आर्य, ब्र0 सुमेधा आर्या तथा अन्य आर्यजन। आर्यसमाज नरेला के अधिकारी एवं सदस्यगण साथ में

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सम्पूर्ण समुल्लासों की ऑडियो डीवीडी। सुमधुर एवं स्पष्ट आवाज में 35 घंटे की चलने वाली डीवीडी जो आपको तथा सुनने वाले समस्त लोगों को सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को समझाने में सहायक होगी। मात्र 15 रुपये में। डाक से मंगाने हेतु डाकव्यय पृथक से देय होगा।

आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर–7 के 19 वें वार्षिकोत्सव पर
आचार्य राजवीर जी शास्त्री सम्मानित

आर्यसमाज रोहिणी सी.एस.सी. पॉकेट सी–7 रोहिणी का 19 वां वार्षिकोत्सव 1 से 4 अप्रैल तक उत्साहपूर्वक मनाया गया। 1 अप्रैल को डॉ. स्वामी मधुरानन्द 'योगमति' (अमृतसर) के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ शुरू हुआ। श्री जगत् वर्मा जी (अमृतसर) के भजन हुए। 4 अप्रैल को महाशय धर्मपाल जी (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा) एवं श्री अश्विनी जी ने वेद एवं व्याकरण के प्रसिद्ध विद्वान् एवं दयानन्द संदेश के अवैतनिक संपादक आचार्य श्री राजवीर शास्त्री को अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

श्री शास्त्री जी ने कहा कि संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। बिना इसका ज्ञान हुए वेदों का ज्ञान अधूरा है। महाशय धर्मपाल जी ने प्रतिदिन यज्ञ करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक युवाओं को आर्यसमाज से जोड़ा जाये। दयानन्द आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार एवं आर्य विद्या मंदिर केशवपुरम के छात्र–छात्राओं ने एवं सांस्कृतिक कार्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में माता कान्ता खंडेलवाल जी और उनके परिवार का विशेष योगदान रहा।

– अश्विनी आर्य, प्रधान

आचार्य श्री राजवीर शास्त्री को सम्मानित करते महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं आर्य तपस्वी श्री सुखेदव, सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं अन्य आर्यजन।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अतुलनीय व विशेष

विश्व की विख्यात प्रतिभाओं में से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अतुलनीय व विशेष हैं। उनके समय में अनेक प्रतिभाएं विभिन्न गुणों से संपन्न तो थीं; परन्तु कोई भी उनकी भांति बहुमखी व्यक्तित्व का धनी नहीं था। जैसे–

कोई व्यक्ति पूर्ण समर्पित ईश्वर भक्त है मगर विद्याविद् नहीं है।

कोई विद्याविद् है तो समाजसुधारक नहीं।
कोई व्यक्ति समाजसुधारक है तो साहसी नहीं।
कोई साहसी है तो ब्रह्मचारी नहीं।
कोई ब्रह्मचारी है तो संन्यासी नहीं।
कोई संन्यासी है तो अच्छा व्याख्यान वक्ता नहीं।
कोई अच्छा वक्ता है तो अच्छा लेखक नहीं।
कोई अच्छा लेखक है तो अच्छा चरित्रवाला नहीं।
अच्छा चरित्रवाला है तो लोक कल्याण की भावना रखने वाला नहीं।

अगर लोक कल्याण की भावना वाला है तो कार्य को परिणाम देने वाला नहीं।

अगर कार्य को परिणाम देने वाला है तो आत्मत्यागी नहीं।
अगर आत्मत्यागी है तो देशभक्त नहीं।
अगर देशभक्त है तो वेद समर्पित नहीं।
अगर वेद समर्पित है तो उदार नहीं।
अगर उदार है तो शुद्ध आहार–व्यवहार वाला नहीं।
शुद्ध आहार–व्यवहार वाला है तो समाज सुधारक नहीं।
समाज सुधारक है तो सरल–सहज नहीं।
सरल सहज है तो जीवन सुन्दरता से विहीन।
जीवन सुन्दरता से युक्त है तो शरीर और आत्मबल नहीं।
अगर शरीर और आत्मबल से युक्त है तो करुणा नहीं।

महर्षि दयानन्द करुणा के महासागर थे। क्योंकि उन्होंने जहर देने वाले अपने पाचक जगन्नाथ को क्षमा कर दिया और उसे रुपये देकर वहां से भगा दिया। यथा नाम तथा गुण वाले महर्षि दयानन्द सम्पूर्ण मनुष्य जाति में आज भी उच्चतम शिखर पर विराजमान हैं।

पृष्ठ ३ का शेष

अमर शहीद महाशय राजपाल

इल्मदीन के घातक प्रहार के शिकार होकर महाशय राजपाल ने अपना बलिदान दे दिया। हत्यारे के इस कुकृत्य की सर्वत्र निंदा हुई किन्तु महात्मा गांधी को अपने भड़काऊ लेखों पर कोई पश्चात्ताप नहीं हुआ। उनकी दृष्टि में सत्य, धर्म और न्याय हेतु हुतात्मा का पद प्राप्त करने वाले महाशय राजपाल एक मामूली बुकसेलर थे और उन्होंने अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए ही उक्त ग्रन्थ प्रकाशित किया था। तथापि सत्य को अधिक समय तक दबाया नहीं गया और पंजाब के प्रसिद्ध कवि महाशय नानकचंद नाज़ ने अमर शहीद को इन शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की–

फख्र से सर उनके ऊंचे आस्मां तक हो गये।
हिन्दुओं ने जब तेरी अरथी उठाई राजपाल।
फूल बरसाये शहीदों ने तेरी अरथी पै खूब।
देवताओं ने तेरी जय–जय बुलाई राजपाल।
हो हर इक हिन्दू को तेरी ही तरह दुनिया नसीब।
जिस तरह तूने छुरी सीने पै खाई राजपाल।
तेरे कातिल पर न क्यों इस्लाम भेजें लानतें।
जब मज़्जमत कर रही है सारी खुदाई राजपाल।
मैंने क्या देखा कि लाखों राजपाल उठने लगे।
दोस्तों ने लाश तेरी जब जलाई राजपाल।

पृष्ठ ३ का शेष

महात्मा हंसराज

vedas by Sawami Dayanand, The vedas as interpreted by Swami Dayanand) तथा **ऋषिदर्शन (गृहस्थ धर्म) मानव धर्मसार, दशप्रश्नी की समीक्षा** आदि से प्रकट होता है। अछूतोद्धार तथा शुद्धि आन्दोलन में उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। वे श्वेत वस्त्रों में संन्यासी थे।1927 में जब दिल्ली में प्रथम आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया तो उसका अध्यक्ष पद महात्माजी को ही दिया गया। गांधी जी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन के दिनों में जब महात्मा हंसराज पर जोर डाला गया कि राष्ट्र की भावना को देखते हुए डी.ए.वी. कॉलेज को बंद कर दें तो दूरदर्शी महात्माजी ने इससे इनकार कर दिया था। वे जानते थे कि असहयोग की लहर क्षणस्थायी है और इसलिए महर्षि दयानन्द के स्मृति में स्थापित इस महाविद्यालय के अस्तित्व को समाप्त कर देना एक ऐतिहासिक भूल होगी।

आर्य संस्थाएं इतिहास लेखन हेतु जानकारियां भेजें

1. अपनी आर्यसमाज की स्थापना के सम्बन्ध में 10–15 पंक्तियां लिखें जिसमें उस समय के क्षेत्र की परिस्थितियां, किनके घर से आरम्भ हुआ, किन्होंने किया, आदि का भी उल्लेख हो।
2. आर्यसमाज की स्थापना की तिथि, संस्थापकों के नाम एवं परिचय सहित – यथासम्भव रिकार्ड के अनुसार हो तो बेहतर है।
3. आर्यसमाज के वर्तमान भवन के बृहद् तीन–चार चित्र अलग–अलग कोण से खींचकर भेजें जिसमें आर्यसमाज का नामपट्ट लिखा हिस्सा आ जाए, तो बेहतर है।(चित्र सीडी में भी भेजें)।
4. आर्यसमाज द्वारा वर्तमान में संचालित समस्त गतिविधियों की जानकारी।
5. स्थापना से अब तक किए गए मुख्य कार्यों का विवरण।
6. वर्तमान के तीन पदाधिकारियों (प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष) के नाम व फोटोग्राफ एवं महिला आर्यसमाज के भी उपरोक्त तीन पदाधिकारियों के फोटोग्राफ।(फोटो सीडी में भी भेजें) प्रत्येक फोटोग्राफ के पीछे उनका नाम अवश्य लिखा हो।
7. स्थापना काल से अब तक रहे अधिकारियों की सूची कार्यकाल सहित (यदि सम्भव हो तो)।
8. वे कार्य जिनसे आपकी आर्यसमाज ने विशेषता प्राप्त की हों।
9. यदि कोई महान् व्यक्तित्व आपकी आर्यसमाज से सम्बन्धित रहे हों तो उनका विवरण परिचय अवश्य दें।
10. आर्यसमाज से सम्बन्धित कोई ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज जिसकी फोटोप्रति छापना इतिहास की दृष्टि से आप उत्तम समझें तो उसकी सॉफ्ट कॉपी करके अवश्य भेजें।
11. सक्रिय आर्यसमाजों से निवेदन है कि यदि उनके आस–पास के क्षेत्र में यदि कोई आर्यसमाज निष्क्रिय है तो उसके बारे में भी सूचना दें ताकि उस समाज को सबके सहयोग से सक्रिय बनाया जा सके।
12. आर्यसमाज के प्रकल्प जैसे – विद्यालय, गुरुकुल, औषधालय, अनाथालय, गौशाला आदि के संचालन के बारे में जानकारी दें। दिल्ली से जुड़ी आर्यसमाजों के इतिहास का संकलन दिल्ली सभा एवं राष्ट्र स्तर पर इस कार्य को सार्वदेशिक सभा करेगी।
13. धनराशि अभी न भेजें, प्रक्रिया चल रही है। आपके द्वारा भेजे गए विवरण को व्यवस्थित कर हम उसे आपके पास पुनरावलोकन के लिए भेजेंगे। आप द्वारा उसे अन्तिम स्वीकृति मिलने के बाद उसे संकलन में संकलित किया जाएगा। जिससे कि किसी प्रकार की त्रुटि न रह सके। उसी समय आप सूचना मिलने पर धनराशि भेजें।

नोट: इन सबके अतिरिक्त अपनी आर्यसमाज के बारे में कुछ विशेष जानकारी/टिप्पणी देना चाहें तो उसे भी अलग से अवश्य ही दे देवें।

विशेष नोट: 1. इतिहास ग्रन्थ में प्रत्येक आर्यसमाज के विवरण के लिए दो पृष्ठ आरक्षित होंगे। जिसमें आधे पृष्ठ पर फोटो तथा शेष डेढ़ पृष्ठ पर आर्यसमाज का उपरोक्त वर्णन सम्पादित कर प्रकाशित किया जाएगा। 2. यदि समाज 50 वर्ष से अधिक पुराना है, वह चाहे तो अतिरिक्त शुल्क 750/– रुपये देकर तीसरा पृष्ठ भी ले सकता है। 3. ग्रन्थ का आकार 20×30×8 होगा। फोटो रंगीन प्रकाशित होंगे। इतिहास लेखन समिति ने प्रत्येक आर्यसमाज को 1000/– रुपये प्रति पृष्ठ की दर से शुल्क निर्धारित किया है। यह ग्रन्थ लगभग 700–800 पृष्ठों का होगा तथा दो भागों में प्रकाशित होगा। दोनों भागों का अनुमानित मूल्य 250/– रुपये होगा। यह ग्रन्थ आर्यसमाजों के इतिहास लेखन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। 4. इस ग्रन्थ में जानकारी भेजने वाली प्रत्येक आर्यसमाज/संस्था को ग्रन्थ की 5 प्रतियां निःशुल्क दी जाएंगी। 5. अपने पत्र एवं जानकारियां **'संयोजक, दिल्ली आर्यसमाज इतिहास लेखन समिति'** – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 के पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेज देवें। यह कार्य समय साध्य है अतएव इसको पूर्ण होने में कुछ समय लगेगा। कुछ आर्यसमाजों ने इस सम्बन्ध में प्रकाशन सामग्री भेज दी है। अतः जिन समाजों ने नहीं भेजी है कृपया वे भी यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करें, जिससे इस दिशा में आगामी कार्यवाही की जा सके।

– ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान *विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)*

अभियान चालू रहेगा – समिति

3 अप्रैल, 2010 को गो माँस निषेध अभियान समिति की बैठक में 22 मार्च 2010 को दिल्ली विधान सभा में विकास मंत्री श्री राजकुमार चौहान के वक्तव्य– 'राष्ट्रमंडल खेलों में गो माँस परोसने की अनुमति नहीं दी जाएगी' पर विचार किया गया तथा यह निर्णय लिया गया कि जब तक खेल मंत्रालय अथवा खेल आयोजन समिति के अधिकारियों द्वारा लिखित प्रामाणिक वक्तव्य जारी नहीं किया जाता तब तक आन्दोलन जारी रखा जाए। संयोजक श्री स्वामी सत्यबन्धु ने जनजागरण अभियानों एवं दिल्ली विधान सभा में इस मुद्दे को उठाने में समिति की भूमिका, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के सहयोग, मुख्यमंत्री तथा राष्ट्रपति से हुई मुलाकात आदि के बारे में बताया। बैठक में निर्णय लिया गया कि भजनोपदेश द्वारा दिल्ली और उसके आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में गोमाँस परोसने के विरुद्ध जनजागरण अभियान में तेजी लायी जाये। उच्चन्यायालय/सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका डालने पर विचार किया जाय, जिला मुख्यालयों में प्रदर्शन और रैलियां की जाएं, 25 जून 2010 को हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जन्तर मन्तर पर आयोजित प्रदर्शन में सभा को सहयोग दिया जाए, केन्द्रीय खेल मंत्री या खेल आयोजन समिति के अध्यक्ष से शिष्ट मंडल के साथ भेंट कर स्थिति स्पष्ट की जाय। बैठक में स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी रामशरणानन्द जी, श्री विनय आर्य (दिल्ली सभा मंत्री) प्रो. जयदेव आर्य, श्री जसवीर सिंह नामधारी, श्री सुखवीर सिंह सैनी (भारत गोसेवक समाज) श्री दिनेश त्यागी (हिन्दू महासभा), श्रीमती गीतांजलि, श्री ए. के. मल्होत्रा, श्री विजय गुप्ता, श्री हितेश तथा बड़ी संख्या में अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

– स्वामी सत्यबंधु, संयोजक

शोक समाचार

श्री विनय दत्ता को मातृशोक

आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी एवं आर्य वीर दल जनकपुरी नई दिल्ली से जुड़े कर्मठ कार्यकर्ता श्री विनय दत्ता की माता श्रीमती भावना दत्ता का 4अप्रैल को 54 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे लगभग डेढ़ साल से अस्वस्थ थीं। उनका अन्त्येष्टि संस्कार उसी दिन सुभाष नगर (कच्चा तिहाड़) बेरी वाला बाग स्थित श्मशान भूमि में वैदिक रीति से कर दिया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री विनय आर्य (महामंत्री दिल्ली सभा) वीरेन्द्र आर्य (आर्य वीर दल संचालक दिल्ली प्रदेश), जितेन्द्र भाटिया (कोषाध्यक्ष आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश), बृहस्पति, राजीव जी (जनकपुरी) आदि के साथ–साथ आर्यसमाज के सदस्य, पदाधिकारी, इष्टमित्र और शुभचिन्तक उपस्थित थे। वे धार्मिक विचारों वाली थीं। वह अति सरल और उदार थीं। वे अपने पीछे पति श्री विनोद कुमार दत्ता एवं दो पुत्र श्री विनय दत्ता एवं श्री मनीष दत्ता को छोड़ गयी हैं। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 6 अप्रैल, 2010 को सायं 3 से 4 बजे सनातन धर्म मन्दिर जनकपुरी में सम्पन्न हुई जिसमें सभा की ओर से श्री विनय आर्य जी ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री जितेन्द्र आर्य को पितृशोक

आर्यसमाज पटेल नगर के पूर्व प्रधान और संरक्षक श्री जितेन्द्र जी आर्य के पिता श्री चन्द्रभान आर्य जी का 88 वर्ष की आयु में दिल्ली में निधन हो गया। वे सोनीपत में रहते थे। वे कुछ दिनों से अस्वस्थ थे। वे आर्यसमाज लाहौर और जुग्गी वाला से जुड़े थे। देश का बंटवारा होने के बाद वे सोनीपत में बस गये और आजीवन बड़ा बाजार शहर पानीपत से जुड़े रहे। उन्होंने आर्यसमाज के प्रचार –प्रसार में सराहनीय योगदान दिया। वे अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णादेवी, पुत्र श्री जितेन्द्र आर्य–श्रीमती कान्ता आर्या, श्री भीमसेन आर्य –श्रीमती डिम्पल आर्या, श्री सन्नी आर्य–श्रीमती पूनम आर्या एवं पुत्री श्रीमती सविता अरोड़ा–श्री ओमप्रकाश अरोड़ा (आर्यसमाज, राजौरी गार्डन मंत्री) को छोड़ गये हैं। उन्होंने अपने बच्चों को बचपन से ही आर्यसमाज के संस्कार दिये थे। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज पटेल नगर में दिनांक 6 अप्रैल को सम्पन्न हुई जिसमें सभा की ओर से श्री विनय आर्य जी ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

– जारी पृष्ठ 5 प

आर्यसमाज आदर्श नगर दिल्ली–33 में

सत्यार्थप्रकाश शंका–समाधान

20से 23 अप्रैल, 2010

आर्यसमाज आदर्श नगर दिल्ली द्वारा 20 से 23 अप्रैल तक स्वामी विवेकानन्द जी (दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़, गुजरात) के सान्निध्य में महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश शंका–समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। 20 अप्रैल को रात्रि में 8 से 9.30 बजे तक स्वामी जी सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास पर चर्चा और श्रोताओं की शंकाओं का समाधान करेंगे। यह कार्यक्रम 21 –22 अप्रैल को प्रातः काल 6.30 से 8 बजे तक, रात्रि में 8 से 9.30 बजे तक एवं 23 अप्रैल को प्रातःकाल 6.30 से 8 बजे तक कार्यक्रम होगा। – ***कृष्णदेव बत्रा, प्रधान***

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली –1 निम्नलिखित पदों के लिए योग्य, निष्ठावान, समर्पित एवं कर्त्तव्यनिष्ठ अभ्यर्थियों से आवेदनपत्र आमन्त्रित करती है–

1. MBBS/BAMS(RMO) डॉक्टर –2 : सभा के चिकित्सालय दीवानचन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य धर्मार्थ हॉस्पीटल के लिए। डॉक्टर पति–पत्नी को वरीयता।

2. एकाउंटेंट– 1 कम्प्यूटर पर टैली में कार्य करने में निपुण हो।

3. ड्राइवर– 2 (एक कार वाहन चालक और दूसरा 407 मेटाडोर पर बने प्रचार वाहन के लिए) वैध लाइसेंस और बैजधारी हो। टेम्पो वाहन चालक के लिए द्वारिका, उत्तम नगर, पंखा रोड (दिल्ली) के आसपास रहने वाले को वरीयता। प्रचार वाहन के लिए किसी भी प्रदेश का चालक अभ्यर्थी हो सकता है। उसे दिल्ली और अन्य प्रदेशों में भी आना–जाना होगा। आवास और भोजन की सुविधा दी जायेगी।

विशेष– आर्य परिवारों को वरीयता। सेवानिवृत्त महानुभाव जो अपना पूरा समय सभा में देना चाहें, उनका हार्दिक स्वागत है। इच्छुक अभ्यर्थी अपने आवेदन पत्र बायोडाटा (जीवनवृत्त) के साथ शीघ्रातिशीघ्र उपर्युक्त पते पर भेजें अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com करें।

– विनय आर्य, महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
www.delhisabha.com

आर्यसमाज शकरपुर का

43 वां वार्षिकोत्सव 3 से 9 मई

आर्यसमाज शकरपुर का 43 वां वार्षिकोत्सव 3 से 9 मई तक सोल्लास मनाया जा रहा है। वैदिक प्रवक्ता डॉ. नरेन्द्र वेदालंकर (ब्रह्मा) 3 से 8 मई तक प्रातः 6.45 से 8 बजे तक चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ करायेंगे। रात्रि में 9 से 10 बजे तक उनकी वेद कथा होगी। इससे पूर्व श्री ज्योति स्वरूप जी के भजन होंगे। 9 मई को प्रातः 8 से 10 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। इसके पश्चात् 10 से 1.30 बजे तक आर्य सम्मेलन के अन्तर्गत 'भारतीय धर्म और संस्कृति का भविष्य तथा हमारा कर्तव्य' विषय पर संगोष्ठी होगी। इसकी अध्यक्षता श्री सत्यपाल भाटिया (उप प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) करेंगे। आप सपरिवार उपस्थित होकर इस आयोजन को सफल बनायें। ***–पतराम त्यागी, मन्त्री***

आर्यसमाज बाजार सीताराम का

90 वां वाषिकोत्सव 12–18 अप्रैल

12 से 18 अप्रैल तक आर्यसमाज बाजार सीताराम द्वारा वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा डॉ0 धर्मवीर शास्त्री सवा लाख गायत्री मंत्र यज्ञ सम्पन्न करायेंगे। इसके साथ ही भजन, प्रवचन, अन्तर्विद्यालय भाषण प्रतियोगिता, समूह गान प्रतियोगिता आयोजित की गयी हैं। आर्य स्त्री समाज अपना 65वां वार्षिकोत्सव मनाएगा। इसमें श्रीमती शकुन्तला आर्या (पूर्व महापौर दिल्ली), डॉ0 सरस्वती जी आदि विचार प्रकट करेंगी।18 अप्रैल को 10 से 1.00 बजे तक आर्य सम्मेलन होगा। आप सपरिवार उपस्थित होकर इस आयोजन को सफल बनायें।

– रामकिशन अग्रवाल, प्रधान

निर्वाचन

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी

दिल्ली–110 095

प्रधान	–	श्री तिलक राज सेठी
मंत्री	–	श्री सतेन्द्रकुमार मल्होत्रा
कोषाध्यक्ष–		श्री अनिलकुमार भाटिया

आर्यसमाज नकुड़ (सहारनपुर)

प्रधान	: राजकुमार गोयल
मन्त्री	: भूपेन्द्र कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष	: डॉ0 शिवकुमार आर्य

आर्यसमाज ईस्ट ऑफ कैलाश नई दिल्ली –65 के

हॉल का उद्घाटन समारोह

आर्यसमाज ईस्ट ऑफ कैलाश के बहुउद्देशीय हॉल का उद्घाटन एवं आर्यसमाज का 136वां स्थापना दिवस समारोह 17–18 अप्रैल को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। संगीत संध्या में श्रीमती शशि प्रभा के भजन होंगे। 18 अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। 9.45 से 10.30 बजे तक हॉल का उद्घाटन कार्यक्रम होगा। इसका उद्घाटन प्रो. किरण वालिया (स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्री, दिल्ली सरकार) करेंगी। आप सपरिवार उपस्थित होकर इस आयोजन को सफल बनायें।

–नरेन्द्र नारंग, प्रधान

आर्यसमाज पश्चिम विहार का

32 वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पश्चिम विहार का वार्षिकोत्सव 19 से 25 अप्रैल तक मनाया जा रहा है। यजुर्वेद महायज्ञ स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (यज्ञ ब्रह्मा) कराएंगे। इस अवसर पर सायं कालीन सत्संग, भजन, वेदकथा, आर्य महिला सम्मेलन आदि का आयोजन किया जा रहा है। 15 से 17 अप्रैल प्रातः काल प्रभात फेरी निकाली जाएगी। 25 अप्रैल को यज्ञ का पूर्णाहुति होगी। 9.30 बजे से 1.00 बजे तक आयोजित सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता श्री बलदेव राज सेठ करेंगे। इस अवसर पर आप सभी पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

–जगदीश चन्द्र नांगिया, प्रधान

आर्यसमाज विवेक विहार दिल्ली–95 का

39 वां वार्षिकोत्सव 12–18 अप्रैल

आर्यसमाज विवेक विहार का 39 वां वार्षिकोत्सव 12–18 अप्रैल तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ, भजन, प्रवचन, महिला सम्मेलन एवं बाल कार्यक्रम के तहत नैतिक शिक्षा शिविर, चरित्र निर्माण, जीने की कला एवं महर्षि दयानन्द का जीवन आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आप सभी पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

–गजेन्द्र सिंह सक्सेना, प्रधान

आर्यसमाज सैक्टर –3 आर. के. पुरम एवं डी.डी.ए. फ्लैट्स मुनीरका दिल्ली का

47 वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सैक्टर–3 एवं डी.डी.ए. फ्लैट्स द्वारा17 अप्रैल को वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य दिनेश शास्त्री (ब्रह्मा) यज्ञ सम्पन्न करायेंगे। भजन, प्रवचन होंगे। आप सभी इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाएं।

– बृजलाल मल्होत्रा, प्रधान

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद में

प्रवेश प्रारम्भ

उत्तम प्रकृति वातावरण, विद्युत, जल एवं श्रेष्ठ आचार्यों से युक्त आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद में सत्र 2010–2011 के लिए नवीन प्रवेश 25 जून से 15 जुलाई तक होंगे। जिसमें पांचवीं और छठवीं कक्षा के प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण छात्रों का आचार्यो द्वारा पूर्व परीक्षा लेकर प्रवेश दिया जायेगा। इच्छुक अभिभावक **मो0 09827513029** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

– सत्य सिन्धु, आचार्य

MDH हवन सामग्री

अब घर बैठे पाएं मात्र 57/– किलो

आप अपने आर्डर सभी कार्यदिवसों में दोपहर 12 से रात्रि 8 बजे तक फोन : 011–23360150, 9958174441 पर बुक करा सकते हैं। – ***संयोजक***

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक–युवतियों का परिचय सम्मेलन पंजीकरण यथाशीघ्र कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा प्रारंभ की गयी आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के लिए पंजीकरण किया जा रहा है। कुछ आर्य जनों ने इसके लिए 28 फरवरी को आयोजित आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह में पंजीकरण कराया था। उपलब्ध फार्मों के आधार पर विवाह डायरेक्टरी के प्रकाशन की प्रक्रिया शुरू कर दी गयी है। परिचय सम्मेलन से15 दिन पूर्व पंजीकृत महानुभावों को डायरेक्टरी उपलब्ध करा दी जायेगी। **यह सम्मेलन जून 2010 में आर्यसमाज पंजाबी बाग (प0) में होना प्रस्तावित है।** अतः जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे 5/– रुपये का डाक टिकट लगा अपना पता लिखा लिफाफा भेजकर पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www.delhisabha.com से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **100 रुपये (एक सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1'** के पते पर भेज दें। इस संबंध में विशेष जानकारी के लिए इस योजना के **संयोजक श्री गोविन्द लाल जी (मोबा. 9811623552) एवं श्री कंवरभान खेत्रपाल जी (9210484859)** से संपर्क कर सकते हैं।

– विनय आर्य, महामंत्री , 9958174441

पाठकों के पत्र

श्री सम्पादक जी, सादर नमस्ते !

'आर्य संदेश' के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक को बधाई तथा दीर्घायु की कामना। बढ़िया सुन्दर होली अंक छापने तथा वितरण करने की। नाम व हमारा पता आप ठीक नहीं लिख रहे हैं। कृपया विनम्र निवेदन है कि ठीक से लिखें। यह कार्य जो आप कर रहे हैं बेहद कठिन है। हमारी भगवान से प्रार्थना है कि वह आप सबको इससे भी अच्छा छापने की शक्ति प्रदान करें।

– महेन्द्र पाल वार्ष्णेय, 200 सराय सुल्तानी, अलीगढ़ (उ0प्र0)

टिप्पणी : *– सम्मानीय पाठक, आपके पते को ठीक करा दिया गया है। आशा है, आपको नियमित रूप से साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' प्राप्त होता रहेगा।*

– सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

12 अप्रैल, 2010 से 18 अप्रैल, 2010

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १५/१६-०४-२०१०
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रतिनिधि सभा का प्रधान और मंत्री घोषित कर दिया।

श्री नरेन्द्र सुमन ने तीस हजारी कोर्ट में एक आवेदन पत्र दिया जिसमें उन्होंने स्वयं को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मंत्री घोषित करते हुए कहा कि विनय आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का महामंत्री होने के नाते स्वामी अग्निवेश आदि पर जो मुकदमा किया था, क्योंकि अब उनको सार्वदेशिक सभा ने हटा दिया है और उनके स्थान पर मुझे (नरेन्द्र सुमन) मंत्री बनाया है अतएव इस चल रहे मुकदमे में विनय आर्य के स्थान पर बतौर वादी मेरा नाम जोड़ दिया जाये। इस आवेदन पर बहस के बाद कोर्ट ने उनके उपर्युक्त दावे को नकारते हुए उसे पूरी तरह से खारिज कर दिया। फैसले की प्रति

विशेष– यह समाचार आर्य जनता के सूचनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है। अत्यधिक दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है कि इतना सब कुछ होने पर भी नरेन्द्र सुमन अपने को अवैध रूप से मंत्री घोषित कर रहे हैं। अपने को अवैध रूप से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान घोषित करने वाले वैद्य इन्द्रदेव की ऐसी ही एक करतूत का भंडाफोड़ आर्य संदेश के (29 मार्च से 4 अप्रैल 2010) अंक में किया गया था।

आर्यजनो! सभा को दो स्तरों पर काम करना पड़ रहा है। एक ओर सभा वेद एवं आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के कार्य में लगी है तो दूसरी ओर वह इस तरह के मुकदमे भी लड़ रही है। ऐसे में सभा को आपके भरपूर सहयोग की आवश्यकता है। आप सबके सहयोग और नैतिक समर्थन से ही सभा ऐसे झंझटों से निपट सकती है। मुकदमों में सभा का बहुत अधिक शक्ति और समय का अपव्यय हो रहा है। सभा को ऐसे मुकदमों से छुटकारा मिल जाये तो वह और भी तेजी से आर्यसमाज के कार्यों को कर सकती है। कोई भी संगठन बिना एक हुए किसी भी कार्य को करने में समर्थ नहीं हो सकता है। अत: सभी आर्यों से निवेदन है कि वे संगठन की शक्ति को स्वीकार करते हुए महर्षि दयानन्द के आदेश– 'संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है' को पूरा करने में जुट जायें। यह आप सबके सहयोग से ही संभव है। आशा है कि सभी आर्यजन इस पर विचार करेंगे और पूर्व की भांति सभा को अपना भरपूर सहयोग देंगे।

–विनय आर्य, महामंत्री

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का

राष्ट्रीय शिविर

6 जून से 13 जून अजमेर में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल द्वारा व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण को लेकर 6 जून से 13 जून तक शुक्ला गार्डन, आर्दश नगर, अजमेर में लगाया जा रहा है। शिविर का उद्घाटन 6 जून सायंकाल 5 बजे होगा। कन्याओं को शरीरिक एवं बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्र प्रशिक्षण, हस्तकला, संगीत एवं वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना शिविर लगाने का लक्ष्य है। सभी प्रान्तीय सभाओं व जिला समाजों से जहां–जहां वीरांगना दल की शाखाएं लगती हैं वे अपनी चुनी कम से कम दो वीरांगना जो कम से कम दो शिविरों में शामिल हुई हों, को इस शिविर में भेजकर इसका लाभ उठाएं।

शिविर में सैकड़ों कन्याएं भाग लेंगी अत: आर्यजनों ने निवेदन है कि वे अपनी सामर्थ्य के अनुसार नकद राशि, आटा, दाल, चावल आदि देकर पुण्य का लाभ उठाएं एवं कार्यक्रम को सफल बनाएं।

विशेष जानकारी के लिए **साध्वी उत्तमा जी (पूर्वनाम श्रीमती उज्ज्वला वर्मा) से 9582385950(दिल्ली), 09672286863 (अजमेर)** पर सम्पर्क करें। – ***संयोजक***

प्रतिष्ठा में,
श्री.........................

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

केवल मात्र 200/- रुपये सैकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

– सम्पर्क करें –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110 01

दूरभाष : 23360150, 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : सुशील महाजन   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर